विद्यालयी शिक्षा में शांति शिक्षा

राखी गिरीराज धिंग्रा*
सुनीता मगरे**

'शिक्षा' मनुष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग है, जो मनुष्य को जन्म से मृत्यु तक मानवीय गुण विकसित करने में मदद करती है। इस प्रक्रिया में कई मूल्यों का योगदान होता है। इन मूल्यों को विकसित करने के लिए खास तौर पर बच्चों और युवाओं को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है। आज विद्यार्थियों में अच्छे मानवीय मूल्यों को आत्मसात कराना और उनको अमल कराना ज़रूरी हो गया है। अतः शांति शिक्षा, नैतिक मूल्यों के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण, शांति मूल्यों और कौशलों का मानव जगत् तथा प्रकृति के बीच सामंजस्य बिठाने का कार्य करती है। इसमें व्यक्तिगत विकास हेतु आवश्यक प्यार, उल्लास, उम्मीद और हिम्मत के लिए आवश्यक आंतरिक मानव अधिकार, सहयोग, सामंजस्य, सहिष्णुता, सामाजिक ज़िम्मेदारियाँ, सांस्कृतिक विविधता आदि का सम्मान भी शामिल है। उपरोक्त सभी बातें आपस में जुड़ी होने के कारण कई मूल्यों को मिलाकर शांति शिक्षा का निर्माण हुआ है। इसलिए, शांति शिक्षा को अलग विषय के रूप में न पढ़ाकर सभी विषयों में समाहित कर पढ़ाया जा सकता है। इस लेख में शांति शिक्षा की आवश्यकता, शांति शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य, शांति शिक्षा के लिए भारत सरकार द्वारा स्थापित आयोगों एवं समितियों के द्वारा दी गई अनुशंसाओं का उल्लेख, शांति शिक्षा को किस प्रकार से पाठ्यक्रम में आसानी से जोड़ा जा सकता है, इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास करना है। क्योंकि आज विश्व एक वैश्विक गाँव-सा बन गया है। उसकी माँगों को पूरा करने के लिए मानव का बहुपक्षीय विकास होना अति आवश्यक है। लेकिन वैश्वीकरण के साथ ही हर तरफ़ प्रतिस्पर्धा का वातावरण भी अत्यंत तीव्र गति से बढ़ रहा है। जिससे समस्त मानव मनों में अशांति फैल गई है। ज्ञातव्य है कि केवल बौद्धिक विकास से ही आतंक रहित विश्व का निर्माण नहीं किया जा सकता है। इसके लिए शांति और अहिंसा को शिक्षा के हर पहलू और स्तर से जोड़ना होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ की इकाई यूनेस्को के संविधान में मानवाधिकार से संबंधित धारा 26 में स्पष्टतः उल्लेख किया गया है कि, "शिक्षा का उद्देश्य मानव के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा सभी राष्ट्रों, जातियों एवं धार्मिक संस्थाओं में प्रेम, सहिष्णुता एवं परस्पर मैत्री की भावना का सृजन करने की प्राथमिकता होना चाहिए।" अतः संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी शांति शिक्षा का पुरज़ोर समर्थन

* *शोधार्थी*, शिक्षाशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई – 400 032
** *सहायक प्राध्यापक*, शिक्षाशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई – 400 032

किया है और अपने सदस्य राष्ट्रों से आग्रह किया है कि विद्यार्थियों को शांति का पाठ अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए। जिसके फलस्वरूप हर व्यक्ति को शांति की महत्ता का आभास होगा और वह अशांति एवं युद्ध के दुष्परिणामों से अवगत होगा। आज विश्व में बढ़ता आतंकवाद स्पष्ट रूप से अशिक्षा, बेरोज़गारी, निराशा एवं अराजकता का ही दुष्परिणाम है। आज भारत सहित विश्व, शांति के लिए शिक्षा अर्थात् मूल्य शिक्षा को बढ़ावा दे रहा है। गांधीजी के अनुसार समाज, शोषण और हिंसा से मुक्त हो जिसके लिए युवा पीढ़ी का एक साथ रहना और शांति उनके जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिए। इसी कारण भारत में शिक्षा के सभी आयोग और समितियों ने सिफ़ारिश की कि शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्य शिक्षा को लागू किया जाना चाहिए। परिणामस्वरूप *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं 1975, 1977, 2000* एवं *2005* में शिक्षा में शांति का एकीकरण किया गया।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शिक्षा में शांति से जुड़े कई मूल्यों को विद्यालय के संपूर्ण भाग में शामिल किया गया, जैसे — पाठ्यक्रम, विद्यालय का वातावरण, विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों के आपसी संबंध, अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया और सभी प्रकार के विद्यालय के कार्यों में शांति मूल्यों को शामिल किया गया। संदर्भ किताबों और सामग्री का गहन अध्ययन करने पर पाया गया कि शांति शिक्षा को शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू किया जाना चाहिए ताकि शिक्षक, विद्यार्थी और संपूर्ण समाज को उसका सर्वोत्तम लाभ मिल सके। (अरूल्समी, 2013)

पीस एजुकेशनरी सॉर्स सेंटर (पी.ए.आर.सी.), यह एक शांति मंच है। पी.ए.आर.सी. के सदस्यों का मुख्य उद्देश्य साथ में मिलकर शांति शिक्षा के माध्यम से शांति की संस्कृति को बढ़ावा देना और शांति का निर्माण करना है। शांति शिक्षा एक सर्वांगीण सहभागिता प्रक्रिया है जिसमें लोकतंत्र और मानव अधिकार, अहिंसा, सामाजिक और आर्थिक न्याय, जेंडर समानता, पर्यावरण स्थिरता, अंतर्राष्ट्रीय न्याय व कानून व्यवस्था, मानव सुरक्षा तथा पारंपरिक रूप से शांति का अभ्यास का अध्ययन कराया जाता है (राव, 2012)। अनेक एन.जी.ओ. द्वारा भी शांति शिक्षा के प्रचार व प्रसार हेतु महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। वे इस बात को भली-भाँति समझ गए हैं कि शिक्षा में शांति की एक अहम व महत्वपूर्ण भूमिका है। खासकर युवाओं में आदर, सामाजिक और सामुदायिक कार्य हेतु, शांति शिक्षा एक प्रमुख घटक है। उसी के साथ ही शांति शिक्षा का आधार सामाजिक न्याय और समानता को माना गया है जिसमें अहिंसात्मक समाज के विकास पर ज़ोर दिया गया है। इसी प्रकार मानव अधिकार का आधार समानता और बिना किसी भेदभाव के समाज में शांति को स्थापित करना है।

शांति शिक्षा से संबंधित लेख

- डेविस (2015) के अनुसार, शांति शिक्षा के अंतर्गत न्याय-संवेदनशील शिक्षा की आवश्यकता है। इसीलिए शिक्षकों, विद्यालय व प्रशिक्षण कॉलेजों को स्वयं हिंसा से मुक्त होने की आवश्यकता है। अब भौतिक या प्रतीकात्मकता के साथ शांति की स्थिति पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
- डार ललिथम्मा (2014) के लेख के अनुसार, कश्मीर में विभिन्न समूहों के बीच हिंसा को

कम करने और सहनशीलता, सद्भाव की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए शांति शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। विद्यालय, कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में शांति शिक्षा कार्यक्रम को शुरू करने की आवश्यकता है। शांति शिक्षा को अगर पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए तो वह स्थायी शांति को सशक्त करने का कार्य कर सकती है। शांति शिक्षा सांप्रदायिक दंगों एवं आतंकवाद जैसी समस्याओं के समाधान में फ़ायदेमंद साबित होगी। यह युवाओं की समस्याओं का हल करने व उदासीन स्थिति से बाहर निकालने का साधन साबित हो सकती है।

- जॉनसन और जॉनसन (2014) के लेख के अनुसार, मनुष्य को जीवन जीने के लिए शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। बस यही एक कारण नहीं है, बल्कि जीवन को उपयोगी, फ़ायदेमंद और शांतिपूर्ण बनाना सीखने हेतु भी शिक्षा की आवश्यकता होती है। मानव एक सामाजिक प्राणी होने के कारण व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक समायोजन को बढ़ावा देना, दोस्ती, एक-साथ रहने की कला, आदर-सम्मान, न्याय, प्यार और शांति आदि की भी शिक्षा उसे दी जानी चाहिए।

शांति शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व आतंकवाद, युद्ध की आशंका, भ्रष्टाचार तथा भेदभाव, असमानता की दहशत में जी रहा है। कई प्रकार की विध्वंसकारी घटनाएँ, जैसे — वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला, मुंबई में बम विस्फ़ोट, देश में आंतरिक अशांति उत्पन्न करने वाली घटनाएँ आदि के कारण यह प्रश्न सामने आता है कि इस समस्या का समाधान शांति शिक्षा के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। शांति, शांति शिक्षा के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है, परंतु यह शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो न्याय, क्षमता एवं अहिंसा जैसे मूल्यों पर आधारित हो। शांति शिक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही यू.एन. जनरल असेम्बली रिसोल्यूशन ने वर्ष 2000 से 2010 तक के दशक को "शांति की संस्कृति तथा अहिंसा का दशक" घोषित किया था। शांति शिक्षा के द्वारा मानसिक शांति, व्यक्ति की निजी शांति, पारिवारिक शांति, सामाजिक शांति, विभिन्न राष्ट्रों के बीच शांति स्थापित की जा सकती है। शांति किसी एक मस्तिष्क की स्थिति होती है, जो व्यक्ति के कौशल, अभिवृत्ति और व्यवहार को विकसित करती है। जिससे वह अपने वातावरण के साथ समायोजन के योग्य बनता है। शांति शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो व्यक्ति में सुरक्षा की भावना का विकास करती है। जेम्स पेज के अनुसार, शांति व्यक्ति के आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ज़िम्मेदार होना चाहिए, जैसे — सामाजिक अन्याय और युद्ध के परिणामों के प्रति जागरूकता, स्वयं का तथा दूसरों का कल्याण करने की भावना को प्रोत्साहन देना आदि। स्थायी शांति स्थापित करने के लिए संपूर्ण विश्व को आगे आना होगा। विश्व के समस्त नागरिकों को इसमें अपना योगदान देना होगा। *(शांति के लिए शिक्षा, राष्ट्रीय फ़ोकस सूमह का आधार पत्र, 2005)।*

शांति शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य

शांतिमय जीवन जीने वाले व्यक्ति का निर्माण करना ही शांति शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। 'शांति शिक्षा

मानव को स्वयं के साथ, दूसरों के साथ तथा पर्यावरण के साथ शांतिपूर्वक रहने पर ज़ोर देती है। इसीलिए आदर्श जीवन और शांतप्रिय व्यक्तित्व के निर्माण व विकास हेतु शांति शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं—

- शिक्षा के माध्यम से शांति को स्थापित करना।
- विद्यार्थियों में सामाजिक कौशलों तथा सामंजस्य के साथ जीवन जीने के दृष्टिकोण का विकास करना।
- सामाजिक न्याय के प्रति विचारों को अधिक शक्तिशाली बनाना।
- ज़िम्मेदारी और वर्तमान की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए धर्मनिरपेक्ष संस्कृति का प्रचार करना।
- शिक्षा के द्वारा लोकतांत्रिक संस्कृति का निर्माण करना।
- शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकात्मकता की समृद्धि में योगदान देना।
- अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना को विकसित करना।
- शांति के उपभोक्ताओं के बजाय शांति के निर्माता बनने के योग्य बनाना।
- मानव गरिमा के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करना।
- अहिंसक और गंभीर विचारधारा को विकसित करना।
- बालकों में धार्मिक सहिष्णुता, अन्य प्रजातियों के प्रति आदर भाव, धार्मिक व नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था विकसित कर धर्मनिरपेक्ष संस्कृति का प्रचार करना।
- बालकों में तार्किक चिंतन तथा विश्वव्यापी ज्ञान की खोज की वृत्ति को विकसित करना।
- बालक जिस जगत में रह रहे हैं, उस जगत के प्रति उदार मनोवृत्ति विकसित करना।
- अहिंसात्मक समाज की स्थापना कर अहिंसा के प्रति गंभीर विचारधारा उत्पन्न करना।
- शांति के लिए शिक्षा को जीवन शैली के रूप में अपनाना।

शांति शिक्षा के लिए विभिन्न आयोगों एवं समितियों के द्वारा दी गई अनुशंसाओं का उल्लेख निम्नलिखित है (अरूल्समी, 2013)—

- शांति और अहिंसा की संस्कृति हेतु सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों एवं शैक्षणिक संस्थानों को शामिल करना।
- शांति शिक्षा को सभी विषयों का हिस्सा बनाया जाए जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल, जागरूकता, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा नैतिक मूल्यों को बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया जाए।
- शांति शिक्षक को स्वयं में शांति हेतु आवश्यक कौशलों का विकास करना चाहिए।
- सेमिनार, कार्यशाला, परिसंवाद आदि का आयोजन एन.सी.ई.आर.टी., यू.जी.सी व अन्य आयोगों व संगठनों द्वारा करवाना चाहिए।
- शिक्षक, विद्यार्थियों को शांति शिक्षा सिखाने के लिए लर्निंग पैकेज बनाएँ। जिससे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी, सकारात्मक बदलाव, दृढ़ विश्वास और शांति हेतु कार्य करने में बढ़ावा मिलेगा।
- शिक्षक को अंतर्राष्ट्रीय समझ के लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए। विद्यार्थियों को भी अंतर्राष्ट्रीय समझ हेतु तैयार करें जिससे वे

शांति, सहयोग, मानव अधिकार और मौलिक स्वतंत्रता के बारे में समझ सकें।

- विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा शिक्षा से संबंधित सभी लोगों को शांति शिक्षा के प्रति जागरूकता और विकास हेतु कार्य करना चाहिए, जिसमें अभिभावकों व समुदाय को भी शामिल करना चाहिए।
- शिक्षकों द्वारा बच्चों को शांति दिवस और उससे जुड़ी गतिविधियों को करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।
- हिंसा और शांति की संस्कृति के सिद्धांतों और रणनीतियों को सभी विषयों के पाठ्यक्रम में एकीकृत करना, स्थानीय वास्तविकताओं और परंपराओं को ध्यान में रखते हुए सांस्कृतिक विविधता और अंतर्राष्ट्रीय फ्रेमवर्क को ध्यान में रखकर कार्य करें।
- अहिंसा और शांति की संस्कृति को बढ़ावा देने वाले व्यक्तियों और राजनेताओं को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

वर्तमान में शांति शिक्षा के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार तथा राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा विद्यालयी शिक्षा में शांति शिक्षा के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे हैं—

- कई स्कूलों द्वारा हर साल 21 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस का आयोजन किया जा रहा है।
- शांति विषय पर चर्चा सत्र, सेमिनार, कार्यशाला, सम्मेलन आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जा रहा है।
- शांति हेतु आवश्यक जागरूकता कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है।
- विद्यालयों द्वारा बालकों में शांति को स्थापित करने हेतु कई प्रकार के अनुसंधान कार्यों को किया जा रहा है।
- खेलों द्वारा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के माध्यम से शांति शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ ही उसका अनुकरण विद्यार्थी अपने जीवन में भी करें, इस पर प्रमुखता से ध्यान देकर कार्य किया जा रहा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी शिक्षा द्वारा शांति शिक्षा

शांति शिक्षा का प्रमुख ध्येय संपूर्ण रूप से विश्व में शांति बनाए रखने में मदद करना है। शांति शिक्षा की आज सबसे ज़्यादा ज़रूरत देश के युवा वर्ग को है, जिनका दिमाग काफ़ी उत्तेजित और अधिक संवेदनशील है। युवा वर्ग देश का भावी नागरिक है। इसलिए उसकी संवेदनशीलता और उत्तेजना का सही उपयोग किया जाना अधिक ज़रूरी है। अगर हमें बदलाव लाना है तो इसकी शुरुआत सर्वप्रथम विद्यालय तथा विद्यालय के पाठ्यक्रम में कुछ बदलाव लाकर आसानी से की जा सकती है। शांति शिक्षा का समावेश पाठ्यक्रम में इस प्रकार से किया जाए जिसमें विद्यालय व कक्षा का वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, पाठ्यक्रम, विद्यालय, प्रबंधन तथा विद्यालय व पाठ्यक्रम से जुड़ी अनेक गतिविधियों आदि का समावेश हो। इसे पाठ्यक्रम में इस प्रकार से सम्मिलित किया जाए कि विद्यार्थियों में कभी भी निराशा, असुरक्षा, अधीरता, तनाव जैसी भावनाओं का निर्माण न हो। साथ ही उनके

आस-पास और मीडिया के माध्यम से हिंसा के गलत प्रचार का बच्चों के कोमल मन पर किसी भी प्रकार का नकारात्मक प्रभाव न पड़े। शांति शिक्षा विद्यार्थियों को हिंसा के बदले शांति का चुनाव करने में मदद करती है। जिससे वे शांति का सिर्फ़ उपभोग करने के बदले शांति का निर्माण करने की प्रक्रिया में स्वयं सहायता कर सकें। इस हेतु शांति शिक्षा को पाठ्यक्रम में छह प्रमुख माध्यमों के द्वारा आसानी से जोड़ा जा सकता है।

शांति शिक्षा का पाठ्यक्रम में एकीकरण करने के प्रमुख माध्यम

- **विषय संदर्भ** — शांति शिक्षा को पाठ्यक्रम में इस तरह से रखा जाना चाहिए जिससे वह अलग विषय के रूप में नज़र न आकर सभी विषय में निहित है, ऐसा महसूस हो। शांति शिक्षा को वर्तमान पाठ्यक्रम के अनुसार ही पढ़ाया जाना चाहिए। मगर इसे पढ़ाने की विधि, शांति से संबंधित कार्यक्रमों तथा नवीन विषयों के माध्यम से समझाया जाना चाहिए। शांति शिक्षा को विद्यार्थियों की कक्षा, उम्र और शिक्षा के अनुसार ही समझाया जाना चाहिए। प्रत्येक विषय के माध्यम से शांति शिक्षा की संकल्पना को विद्यार्थियों के दिमाग और दृष्टिकोण, दोनों में बदलाव लाने तथा विश्व मूल्यों को आत्मसात करने हेतु प्रयोग किया जाना चाहिए।
- **अध्यापन पद्धतियाँ** — शांति शिक्षा को विद्यार्थियों को किस प्रकार से सिखाया जाए? इस बात से अधिक ज़रूरी यह है कि विद्यार्थियों को क्या सिखाया जाए? विद्यार्थियों को जाति, धर्म से हटकर मानव अधिकार, शांति, खुशी और किस तरह से समस्या का समाधान करना चाहिए, सिखाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को मानव अधिकार, शांति, खुशी और किस तरह से समस्या का समाधान करना चाहिए, सिखाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को शांति की खोज भौतिक सुख-सुविधाओं में न खोजकर अपने आंतरिक मन में खोजनी चाहिए, इस बात की शिक्षा पर अधिक ज़ोर देना चाहिए।
- **पाठ्य सहभागी क्रियाएँ** — पाठ्य सहभागी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों को भविष्य की शिक्षा दी जाती है। पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान से ही नहीं अवगत कराया जाता है, परंतु अभ्यास के माध्यम से उन्हें प्रात्यक्षिक ज्ञान दिया जाता है। विद्यार्थियों को अगर हम प्रात्यक्षिक पद्धति द्वारा शिक्षा दें तो वे अपनी कमज़ोरियों और क्षमताओं को अच्छी तरह से समझने लगते हैं जिससे वे अपना सर्वांगीण विकास आसानी से कर पाते हैं। पाठ्य सहभागी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थी समूह में कार्य करना सीखते हैं, उसी के साथ उनमें नेतृत्व करने तथा निर्णय लेने की भी क्षमता का विकास होने लगता है।
- **कर्मचारियों का विकास** — कर्मचारियों का विकास, शांति शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकरण करने हेतु अति आवश्यक है। विद्यालय का विकास कर्मचारियों के विकास पर ही आधारित होता है, क्योंकि कर्मचारी वर्ग अगर अधिक उत्साही और तत्पर होगा तो सारे काम समय पर और व्यवस्थित तरीके से होंगे। कर्मचारियों के विकास हेतु व्यक्तिगत और व्यावसायिक रिश्तों को अच्छी तरह से बनाए रखना ज़रूरी है, ताकि

अंतर्राष्ट्रीय समझ, लोकतंत्र तथा शांति को बनाए रखा जा सके। इसके लिए संस्था का कार्य है कि वह अपने कर्मचारियों को समय-समय पर प्रेरणा दे। इसके साथ ही कर्मचारी अपने कार्य से संतुष्टि महसूस करें।

- **कक्षा नियोजन** — कक्षा में भिन्नता वाले विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं, इस कारण शांति की संस्कृति को स्थापित किया जाना आवश्यक है। शांति शिक्षा के माध्यम से शिक्षक, विद्यार्थियों की कई प्रकार की समस्याओं का समाधान करते हैं। विद्यार्थियों में अच्छे सदाचार, नीतियाँ, शिष्टाचार, अच्छे बुरे की समझ, समस्या का समाधान, सुनने और समझने की क्षमता का विकास करना आदि कई गुणों का विकास करना शिक्षक का प्रथम कर्तव्य है।
- **विद्यालय नियोजन** — शांति शिक्षा को सुचारु रूप से स्थापित करने हेतु पाठ्यक्रम के साथ ही विद्यालय में शांति शिक्षा का नियोजन किया जाना अति आवश्यक है। इसके लिए संस्थापक का प्रमुख कार्य है कि वे इसकी स्थापना हेतु स्वयं भी अपनी ओर से शांति शिक्षा के लिए कार्य करें। शांति शिक्षा हेतु सर्वप्रथम विद्यालय का वातावरण लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। इसके लिए अनेक पद्धतियों का क्रियान्वयन किया जाना अति आवश्यक है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शांति शिक्षा हेतु गतिविधियों के लिए सुझाव

- विद्यालय में विशेष क्लबों और रीडिंग रूम की स्थापना की जाए जो शांति संबंधी समाचारों पर और ऐसी घटनाओं पर केंद्रित हो जो सामाजिक न्याय और समानता के विरुद्ध हो।
- ऐसी फ़िल्मों की सूची तैयार की जाए जो न्याय और शांति के मूल्यों को बढ़ावा देती हों। उन्हें समय-समय पर विद्यालय में दिखाया जाए।
- शिक्षा में शांति के प्रयास हेतु मीडिया को सहयोगी बनाया जाए। प्रमुख पत्रकारों को बच्चों को संबोधित करने के लिए बुलाया जाए। बच्चों के विचार कम-से-कम महीने में एक बार छापे जाएँ।
- विद्यालय में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के उत्सवों का आयोजन किया जाए।
- विद्यालय में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए जिससे महिलाओं के प्रति सम्मान और उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो।

समाज में उत्पन्न विवादों को सुलझाने के लिए अहिंसात्मक उपाय व गतिविधियों को खोजने हेतु कौशलों के निर्माण की आवश्यकता है। स्थानीय, राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर दैनंदिन बढ़ती हिंसा के कारण विद्यालयी शिक्षा पाठ्यक्रम में शांति शिक्षा को प्रमुख स्थान देना अति आवश्यक हो गया है। शिक्षा के माध्यम से शांति को स्थायी रूप से स्थापित किया जा सकता है। इस स्थायी शांति में सहनशीलता, न्याय, अंतः सांस्कृतिक समझ और नागरिक ज़िम्मेदारियाँ भी शामिल हैं। इसलिए शिक्षा को पुनः नवीन रूप में परिभाषित करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इस हेतु विद्यालयी पाठ्यक्रम में शांति शिक्षा को प्राथमिक रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

आज हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि हमें शांति शिक्षा के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में मानव की ज़िंदगी में सबसे ज़्यादा जगह शारीरिक-मानसिक तनाव, क्रोध, चिंता, अवसाद, जैसी अनगिनत मानसिक बीमारियों ने ले ली है। किसी भी व्यक्ति को आरामदायक जीवनयापन करने के लिए शांति की ही सबसे अधिक आवश्यकता होती है। शांति मनुष्य के संपूर्ण जीवन को प्रभावित करती है, मनुष्य की जीवनयापन की आवश्यकताओं के पश्चात् सबसे बड़ी ज़रूरत शांति को माना जा रहा है। निष्कर्षस्वरूप कहा जा सकता है कि शांति शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यकता है। अतः शांति शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा में प्राथमिक रूप से सम्मिलित किया जाना आवश्यक है।

संदर्भ

अरूल्समी. 2013. *पीस एंड वैल्यू एजुकेशन*. नीलकमल पब्लिकेशन, हैदराबाद.

डार, ललिथम्मा. 2014. *एन इम्प्रीकल स्टडी ऑन पर्सेप्शन ऑफ़ यूथ टुवर्ड्स पीस एजुकेशन इन कश्मीर*. http://www.iosrjournals.org/iosr-jrme/papers/vol-4%20issues-6/version-1/104616468.pdf से लिया गया है.

डेविस. 2015. *द पॉलिसी ऑफ़ पीस एजुकेशन इन पोस्ट कॉन्फिलिक्ट कंट्रीज़*. http://soc.kuleuven.be.crpd/files/working-papers/working-papersdavies.pdf से लिया गया है.

यूनेस्को. 2018. *कन्स्टीट्यूशन ऑफ़ द यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफ़िक एंड कल्चर ऑर्गनाइज़ेशन*. बेसिक टेक्स्ट. http://portal.unesco.org/en/ev.php-URL_ID=15244&URL_DO_TOPIC&URL_SECTION=201 html. से लिया गया है.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2010. *वे टू पीस—ए रिसोर्स बुक फ़ॉर टीचर्स*. रा. शै. अ. प्र. प., नयी दिल्ली.

जॉनसन, डब्ल्यू डेविड और रोजर टी. जॉनसन. 2005. *असेंशियल्स कम्पोनंट्स ऑफ़ पीस एजुकेशन — थ्योरी इनटु प्रैक्टिस*. 44 (4), पृ. 280–292. लॉरेंस अर्लबॉम असोसिएट्स, पब्लिशर्स माहवाह, न्यू जर्सी.